||नहि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते||

छत्रपती शिवाजी शिक्षण मंडळाचे

Arts & Commerce College Vaduj

Tal. Khatav Dist. Satara

Department : हिंदी

Subject : विधा विशेष का अध्ययन

Name : फडतरे विशाल दिपक

रोल नं ५२८

मार्गदर्शक :- चाबळे बी. टी.

बी. ए. भाग ३

Arts & Commerce College Vaduj

Year 2016-17

Rajdhani
DATE / /

कला व वाणिज्य महाविद्यालय, वडूज.

नाव - फडतरे विशाल दिपक
TYBA - हिंदी विभाग
रोल नं - ५२८.
विषय - विधा विशेष का अध्ययन
प्रश्नपत्र क्र - १२

मार्गदर्शक - साबळे सर.

Scanned with CamScanner

कौशल्या बैसत्री का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

Supeor No
पाठ नं - 56व

Rajdhani
DATE / /

भारतीय लोग ज्यादा तर अंधश्रद्धालु है। आजकल शिक्षितों में और देहातों में इसकी मात्रा ज्यादा दिखाई देती है। दवा-दारू के लिए डाक्टर के पास जाने की अपेक्षा ये लोग ओझों, हकीम, बाबा लोगों के पास जाते हैं। लोग भूत-प्रेतों पर ज्यादा विश्वास रखते थे। पूजा के लिए पशु-पक्षियों की बलि भी दी जाती थी। कौसल्या जब ऑफिस में रहती थी तब उनके पड़ोस के घर में साँप निकला था। उसे उन लोगों ने मार दिया और उसका दाह संस्कार भी किया। इस बात का विरोध करते हुए कौसल्या जी कहती हैं- "आप उसे भगा देते, वह जहरीला नहीं था। आपने उसे मारा और फिर उसका सम्मानपूर्वक दाह-संस्कार किया, यह बात मुझे अच्छी नहीं लगी।" उनके इस कथन पर कौसल्या जी को आश्चर्य होता है।

कौसल्या जी के पड़ोस के घर में पूजा थी। लाईन के सभी जान-पहचान की औरतों को हल्दी-कुंकुम के लिए बुलाया था। शाम को सब औरतों चली जाने के बाद कौसल्या जी को बुलाया गया। उन्होंने वहाँ जाकर अपनी नाराजी स्पष्ट शब्दों में प्रकट करते हुए कहा 'मुझे हल्दी कुंकुम, पूजा पाठ में कोई दिलचस्पी नहीं है। मैं स्वयं ऐसे कार्यक्रमों में नहीं जाती, यही बताने में आई हूँ। मैं हल्दी-कुंकुम लेने नहीं आई हूँ। आप ब्राह्मणों को जब अपना स्वार्थ रहता है तब जाति-पाँति की याद नहीं रहती।'

इस तरह कौसल्या बैसंत्री के जीवन के अलग-अलग पहलू हमारे सामने आ जाते हैं।

✡ साहसी और सत्यप्रिय :-

कौसल्या बैसंत्री

महार जाति की होने के कारण बचपन से उन्हें बहुत सारे जातीय दंश झेलने पड़े थे। लेकिन इन सबको सहते हुए वे आगे बढ़ी। कोई छोटा-बड़ा व्यक्ती नाम या जाति पूछे तो बेहिचक वह बताती। इसके सुननेवालों की नजरों में उनके बारे मे तिरस्कार, नफरत, अपमान, व इज्जती आदि की भावना बढ़ाती थी। पर कभी उन्होंने अपनी जात को छिपाया नही।

कौसल्या जी मे जन्मसे ही साहसी वृत्ती थी। बस्ती के कुछ लोग उनकी शिक्षा और रहन-सहन से जलते थे। कोई न कोई छोटा-मोटा कारण निकालकर इन्हे तंग करते थे। एक दिन कौसल्या जी अपनी बुआ के घर से अपने घर आ रही थी। तभी एक लड़के ने उनके पास आकर बाँहो मे अपनी बाँहे डाल दी। कौसल्याजी ने अपनी बाँहे छुड़ाकर उसे दो चाँटे लगाए। उस लड़के ने बाद मे माफी माँगी। कौसल्या जी के पिताजी ने एक पुरानी साइकल खरीदी थी। इस साइकल से वह स्कूल आती-जाती थी। लेकीन किसी ने पोलीस स्टेशन मे रिपोर्ट लिखवाई की वह सायकल चोरी की है। पुलिस सब-इन्स्पेक्टर पूछ-ताछ के लिए घर आगए। तब कौसल्याजी ने पूछा की आप इन्स्पेक्टर है यह हम कैसे माने? पहले आप अपनी वर्दी पहनकर आइए। और हमारे नाम का वारंट भी दिखाए। और एक लड़के ने कौसल्या जी के फोटो के साथ अपनी फोटो बनवाई और उन्हें तंग करने लगा। यह देखकर उन्होंने चप्पल निकालकर जोर से उसके गाल पर दे मारी। पीठ पर भी दो-तीन चप्पल चलाई। इस तरह की अनेक घटनाएँ उनके जीवन में घटी हुवी है, जिससे उनके साहसी और सत्यप्रिय स्वभाव का परिचय मिलता है।

Scanned with CamScanner

Rajdhani
DATE / /

कौसल्या बैसंत्री का जन्म एक अस्पृश्य परिवार की महार जाति में 08-09-1926 को नागपुर की अजनी बाहिर बस्ती में हुआ।

कौसल्या के परिवार में उनकी माँ ने पंद्रह बच्चों को जन्म दिया। पर उसमें से पाँच ही जीवित रहे और ज्यादातर लड़कियाँ ही थी। उनकी माँ का नाम भागीरथी और पिता का नाम रमा था। माता-पिता दोनों ही नौकरी करते थे। कौसल्या अपनी माँ से बहुत प्रभावित थी। अपनी बच्चों को अच्छी पढ़ाई के साथ अच्छे संस्कार भी दिए। माँ को समाज के लोगों से मिलना-जुलना और अच्छी बातों को सिखने की इच्छा थी उनकी साथ अन्याय और अत्याचार को खुलकर विरोध करने की क्षमता भी थी। यह गुण कौसल्या में माँ से विरासत में आये थे। माँ-बाप ने अपने बच्चों का लालन-पालन और जीवन करने में कोई कसर नहीं छोड़ी थी। जहाँ खाना नसीब न हो ऐसी अवस्था में भी अपने संतानों को पढ़ाने की जिद्द उनके मन में थी।

Scanned with CamScanner

Rajdhani
DATE / /

✡ बचपन :-

कौसल्या बैसंत्री का बचपन बहुत ही गरीबी और आर्थिक विपन्नावस्था में बीता। घर में भाई-बहनों की बड़ी फौज ने उनका पूरा जीवन ही अस्त-व्यस्त कर दिया था। माँ-बाप दोनों नौकरी करते थे इसी कारण छोटी बहनों की जिम्मेदारी कौसल्या पर रहती थी और वह उसे पूरी जिम्मेदारी के साथ निभाती थी। माँ के साथ सब बहनें मिलकर घर को साफ-सुथरा रखती थी, लेकिन घर के बाहर का परिवेश एकदम अलग था। गंदगी और दुर्गंधी भरे माहौल में उन्हें साँस लेनी पड़ती थी। तंग गलियों में घूमते सूअर, नंग-धड़ंग बच्चे, कुत्ते, रोजमर्रा के झगड़े इसी वातावरण में कौसल्या का बचपन बीता। स्पृश्य-अस्पृश्य क्या होता है, सवर्ण-असवर्ण की दूरी और इसके परिणाम स्वरूप आनेवाला अपमान, क्षोभ इन सबको उन्होंने बचपन से ही देखा नहीं, भोगा है। इन सबको सहते-सहते वे आगे बढ़ी है।

Scanned with CamScanner

Rajdhani
DATE / /

☆ शिक्षा :-

बचपन से ही कौसल्या को शिक्षा के प्रति लगाव था और इसी कारण वह हर साल प्रत्येक कक्षा में आगे बढ़ी गई। पार्डे बाई की स्कूल में मिसरी तक की शिक्षा लेने के बाद उन्होंने मिडे प्राइमरी स्कूल में प्रवेश लिया। इसके बाद मिडे हाईस्कूल में ही उन्होंने पाँचवी के लिए प्रवेश लिया और वहीं से मैट्रिक पास हो गई। कौसल्या जी उनकी बस्ती की पहली लड़की थी जिसने मैट्रिक पास किया हो। अपने इसी समय हिंदी की प्रसिद्ध कहानी 'उसने कहा था' पढ़ी। उन्हें स्कूल में शिक्षा कम और काम ज्यादा करना अस्पृश्य समाज से संबंधित संस्थाओं से वे जुड़ी गई और सक्रिय सहयोग देने लगी।

Scanned with CamScanner

Rajdhani

DATE / /

का अधिवेशन हुआ। इस अधिवेशन के लिए अन्य प्रांतों से अनेक विद्यार्थी आए थे। उनमें से एक थे, देवेंद्र कुमार सेरांत्री जिनके साथ आगे चलकर कौशल्या जी की शादी हुई।

प्रश्न 8- कौशल्या जी का विवाह देवेंद्र कुमार बैसंत्री के साथ 16 नवंबर 1947 को मजिस्ट्रेट के सामने हुआ। देवेंद्र कुमार एम.ए. एल.-एल.बी. करके डी.लिट कर रहे थे। इन दोनों का परिचय अधिवेशन के समय हो गया था। दोनों एक दूसरे की ओर आकर्षित भी हुए। बाद में कौशल्या जी को पता चला कि देवेंद्र कुमार शादी-शुदा है और दो बच्चों का पिता है। इसी बीच में उसकी पत्नी की मृत्यु हो जाती है। तब वह फिर से कौशल्या जी से संपर्क स्थापित करता है और अपनी सफाई देता है। कौशल्याजी के मन में प्रेम निर्माण हो जाता है। वह किसी सामाजिक कार्य करनेवाले अध्यक्ष व्यक्ति से शादी करना चाहती थी और इस दृष्टि से देवेंद्र कुमार अनुरूप था। देवेंद्र कुमार और कौशल्याजी की शादी मजिस्ट्रेट के सामने हो गई क्योंकि कौशल्या फिजूल खर्च करना चाहती थी। लेकिन शादी के बाद देवेंद्र कुमार का असली चेहरा सामने आने लगा। वह सिर्फ अपनी ही धुन में रहनेवाला आदमी था। मेल मिलाप और जिंदगी उसने कभी कौशल्याजी की भावना, इच्छा और खुशी की कदर नहीं की। बात-बात पर गंदी गालियाँ देना, हाथ उठाना आदि उसकी आदत थी। वह माँ-बाप और पहली पत्नी को भी पिटता था। देवेंद्र कुमार को पत्नी सिर्फ खाना बनाने और उसकी शारीरिक सुख मिटाने के लिए चाहिए थी। वह बात बात पर कौशल्या जी को उसे स्वतंत्र रहने नहीं देता था। नाममात्र मिला था। लेकिन घर में वह अपनी पत्नी को दासी बनाकर रखता था। अंत में कौशल्या जी उनसे अलग हो गई और कोर्ट में मुकदमा दायर किया। इस तरह उनका विवाहित जीवन असफल रहा।

Scanned with CamScanner